विचार बिन्दु

नारी की उन्नति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है। –अरस्तु

टीवी चैनलों पर सुंदर महिला एंकरों की मौजूदगी

एक अकादमिक जर्नल में छापा शोध-पत्र यह सोचने को मजबूर करता है कि टीवी समाचार चैनलों में पुरुषों के मुक़ाबले स्त्रियां, वे भी सुदर्शना, एंकर के रूप में क्यों अधिकतर नज़र आती हैं? यह भी कि ग्लैमर वाली सुंदर महिला अधिकारियों, खिलाड़ियों व साध्वियों को कवरेज में खूब जगह क्यों मिलती है? जनसंचार के अकादमिक जर्नल कम्युनिकेशन टुडे के नये अंक में छपे एक अध्ययन 'मीडिया के सौंदर्यबोध' में इसकी पड़ताल की गई है। शोध-पत्र का लेखक कहता है कि "टेलीविजन के रुपहले पर्दे पर वहीं मुखमंडल अधिक दिखाये जाते हैं जिनमें सौंदर्य का पुट हो। न्यूज एंकर को पत्रकारिता की समझ कितनी है इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कितनी फोटोजेनिक है? ... राजनैतिक नेत्रियों और प्रवक्ताओं में भी अक्सर स्क्रीन पर वही ज्यादा सुशोभित होंगी जो सुदर्शन हो और जिसकी छवि मनोहर हो।...महिला खिलाड़ी जितनी सुंदर होगी उसे कवरेज भी उतना ही अधिक मिलता है।" मीडिया के चरित्र पर केंद्रित यह शोध-पत्र कहता है कि "यदि कोई दस्यु सुंदरी है, लेडी माफिया सुंदर है तो मीडिया स्वत: उसका भी संज्ञान ले लेता है। कोई साध्वी, प्रवचनकर्ता के बजाय उसके सौंदर्य साधिक रूप सौंदर्य पर फोकस रहता है।" इस वर्ष हुए 'महाकुंभ के संदर्भ में' इस पेपर को मध्यप्रदेश में सागर के इंक मीडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्युनिकेशन के डॉ. आशीष द्विवेदी ने लिखा है। इससे यह बात अकादमिक रूप से पुष्ट हुई है कि भारतीय समाचार टीवी चैनलों में सुंदर महिलाओं को एंकर या पैनलिस्ट के रूप में प्रस्तुत करना एक सतही लेकिन रणनीतिक चलन बन गया है।

जानकार लोगों का कहना है कि इसका संबंध स्पष्ट रूप से दर्शकों की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों, चैनलों की टीआरपी की होड़, और मीडिया बाज़ारवाद से है। इस प्रवृत्ति के पीछे के अनेक कारण बताए जा सकते हैं। जैसे चैनल संचालकों का यह मानना कि एक 'आकर्षक चेहरा' दर्शकों को ज़्यादा देर तक स्क्रीन से जोड़े रख सकता है। प्रस्तुतिकरण में दक्ष होने के साथ महिला एंकर सुंदर भी हो तो उसे चैनल का टीआरपी बढ़ाने का जरिया समझा जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि यह सोच, विशेषकर मनोरंजन और इंफोटेनमेंट से प्रेरित, चैनलों में गहरी पैठ बना चुकी है। ऐसा सोचने वाले भी कम नहीं हैं कि टीवी चैनल अब सिर्फ खबर देने वाले माध्यम नहीं रहे, बल्कि वे भी एक तरह से बाज़ार के उत्पादों या सेवाओं के 'ब्रांड' जैसे बन गए हैं। सुंदर और पेशेवर दिखने वाले एंकर ब्रांड की 'प्रतिष्ठा' और 'स्टाइल' को संप्रेषित करने का माध्यम बनते हैं। बाज़ार की ताकतों ने 'खबर' के साथ अब 'स्टाइलिश प्रस्तुति' देखने की दर्शकों में आदत डाल दी है, खासकर युवा दर्शकों में। भारतीय समाज में महिलाओं को सुंदरता, शालीनता और सॉफ्टनेस का प्रतीक माना जाता रहा है। समाचार चैनल महिलाओं की इस छवि का प्रयोग करके आपण लिए विश्वसनीयता और सहानुभूति अर्जित करना चाहते हैं। कई बार यह भी देखा गया है कि गंभीर मुद्दों पर टीवी चर्चा के दौरान भी किसी महिला की उपस्थिति केवल 'संतुलन' के लिए रखी जाती है, न कि विशेषज्ञता के लिए। हालांकि टीवी चैनल सीधे यौनिकता को नहीं बेचते, लेकिन 'सुंदरता और स्टाइल' के नाम पर परोक्ष रूप से वहां यह तत्व जाने-अनजाने जरूर मौजूद रहता है। यह खासकर तब महसूस किया जाता है जब महिला एंकरों के कपड़े, मेकअप, बॉडी लैंग्वेज आदि पर ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान दिया जाता है। इस ग्लैमर की वजह से टीवी दर्शक समाचारों को 'मनोरंजन' की तरह देखने लगते हैंऔर यही बाज़ार चाहता है। कई बार सुंदर महिला एंकरों की विशेषज्ञता या पत्रकारिता कौशल की बजाय केवल उनकी दिखावट को प्राथमिकता दी जाती है। कहा जाता है कि भारतीय समाचार चैनलों में सुंदर महिला एंकरों और पैनलिस्टों की उपस्थिति एक ऐसे मिश्रण की तरह है, जो बाज़ार की मांग, दृश्य आकर्षण, सामाजिक पूर्वग्रह, और पेशेवर प्रस्तुतिकरण की चाह के लिए बनता है। मीडिया विशेषज्ञ इसे पत्रकारिता के पेशे के लिए चिंताजनक स्थिति बताते हैं क्योंकि इससे सामग्री की गुणवत्ता और नारी-सशक्तिकरण दोनों पर असर विपरीत पड़ता है।

इस तरह के आरोप भी लगने लगे हैं कि भारतीय टीवी एंकर अब पत्रकार कम और पब्लिक परफॉर्मर या प्रचारक अधिक नज़र आते हैं। भारतीय समाचार चैनल अब केवल खबरें देने वाले माध्यम नहीं रहे। वे एक दृश्य-मनोरंजन उद्योग में बदलते जा रहे हैं, जहां प्रस्तुति, चेहरों की आभा, और 'ग्लैमर' को खबर से कहीं ज़्यादा महत्त्व दिया जाने लगा है। समाचार स्टूडियो में सुंदर महिला एंकरों और पैनलिस्टों की मौजूदगी को प्राथमिकता दी जा रही है। ऐसा कभी स्पष्ट तौर पर, तो कभी सांकेतिक रूप सेहोता है। ऐसा लगता है टीवी चैनलों के लिए मानो सुंदरता ही विश्वसनीयता और आकर्षण का आधार होता है। इसे बहुत से लोग एक चिंताजनक चलन के रूप में उभरता हुआ देखते हैं। भारतीय टीवी चैनल को समाचारों की प्रस्तुति में एंकरों की सुन्दरता ही नहीं भाती है बल्कि उनके दृश्यों का चयन और सेट डिज़ाइन भी भड़कीले ग्लैमर भरे होते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में यह बदलाव केवल सौंदर्य या लिंग के सवाल तक सीमित नहीं है; यह उस गहरी गिरावट की ओर भी संकेत करता है जिसमें भारतीय पत्रकारिता की आत्मा अपने मूल सरोकारों – सवाल, सच, और संवेदना से दूर होती चली जा रही लगती है। इसके विपरीत यदि हम पश्चिम के प्रमुख समाचार टीवी चैनल देखें तो उनके एंकरों में एक संयमित, संतुलित और पेशेवर लहजा स्पष्ट रूप से झलकता है। उनके एंकरों की तथ्य आधारित, शांत और सधी हुई भाषा होती है और वे नाटकीयता की जगह विश्लेषण पर ज़ोर देते हैं। उनकी तुलना में भारतीय एंकर भावनात्मक, जोशीली और भड़काऊ शैली अपनाते हैं। लगभग प्रत्येक समाचार चैनल पर एंकरों द्वारा तेज़ आवाज़ में बोलना, ज़ोरदार हाव-भाव दिखाना, और कई बार अति-नाटकीयता भरा प्रस्तुतीकरण, जैसे कोई बॉलीवुड फिल्म का दृश्य हो, देखने को मिलता है।

भारतीय टीवी पत्रकारिता को अब यह आत्ममंथन करना होगा कि वह एक शो है या एक संवाद। अगर वह संवाद है, तो उसमें एंकर की सुंदरता के साथ-साथ सवालों का सौंदर्य, विचारों की स्पष्टता और संवेदना का प्रकाश भी होना चाहिए। वरना वह दिन दूर नहीं जब खबरें केवल नेत्रसुख बनकर रह जाएंगी, और सत्य, न्याय और जनसरोकार कहीं पर्दे के पीछे खो जाएंगे।

अधिकांश भारतीय चैनलों पर होने वाली राजनैतिक बहसों में दर्शकों की भावनाओं को भड़काने वाली भाषा आम चलन में मिलती है। जहां पश्चिमी एंकरनीतिगत मुद्दों, शोध आधारित रिपोर्टिंग, और वैश्विक परिप्रेक्ष्य पर ध्यान देते हैं तथा बहसों में विनम्रता और तथ्य आधारित संवाद को महत्व देते हैं, वहीं भारतीय एंकर टीआरपी केंद्रित समाचारों को तरजीह देते हैं। उनका ध्यान सेलिब्रिटी पर सबसे अधिक होता है। वे जानबूझ कर विवादों को हवा देते हैं तथा दर्शकों में धार्मिक व राजनीतिक टकराव बढ़ाते हैं। यह भी किसी से छुपा नहीं है कि प्राइम टाइम टीवी बहसों में व्यक्तिगत हमलों या तू-तू, मैं-मैं का बोलबाला रहता है। इसके अलावा भारतीय टीवी चैनलों की हर घंटे 'ब्रेकिंग न्यूज़' देने की आदत सी बन चुकी है। घोर सामान्य खबरों को 'ब्रेकिंग न्यूज' के रूप में प्रस्तुत करते हुए अनेक टीवी चैनल फूहड़ता की हद तक चले जाते हैं। किसी मुख्यमंत्री का सुबह अपने निवास से निकल कर गाड़ी में बैठ कर सचिवालाय के लिए रवाना होना भी ब्रेकिंग न्यूज बन जाती है। भारतीय टीवी चैनलों के सेट भी खूब रंग-बिरंगे होते हैं तो उनके ग्राफिक्स भी कभी-कभी अतिनाटकीय होते हैं। वे स्क्रॉल, टिकर, ब्रेकिंग अलर्ट आदि का जरूरत से ज्यादा प्रयोग करते हैं। 'सेंसेशनलिज़्म' दिखाने के लिए तेज़ संगीत, विजुअल्स और मोंटाज का खुल कर उपयोग होता है। अनेक बार ऐसा लग है जैसे टीवी पर कोई धांसू फिल्म चल रही हो।

पश्चिमी चैनलों के सरल, पेशेवर और साफ-सुथरे डिज़ाइन व प्रस्तुतिकरण, जहां ग्राफिक्स का सीमित लेकिन प्रभावी उपयोग होता है, से भारतीय टीवी प्रस्तुतकर्ता कुछ नहीं सीखते। पश्चिम के चैनल तथा एंकरों का सारा जोर दर्शकों का ध्यान मूल समाचार पर बनाए रखने पर होता है। पश्चिमी के एंकर पत्रकारिता के स्थापित मानकों का पालन अपेक्षाकृत अधिक करते हैं। समाचार प्रस्तुत करते समय वे व्यक्तिगत विचारों को सीमित रखते हैं। हालांकि वहां भी अपवाद मिलते हैं, किन्तु वे बहुत खुलकर नहीं होते। वहां के कई एंकर खोजी पत्रकारिता को बढ़ावा देते हैं मगर दर्शकों पर अपनी राय नहीं थोपते नजर आते। दूसरी तरफ भारतीय एंकरों का राजनीतिक झुकाव साफ़ दिखई पड़ता है। इसीलिए भारतीय समाचार चैनल राजनीति के रंग में पूरी तरह रंगे नजर आते हैं। भारतीय परिदृश्य में यह भी पाया जाता है कि कुछ एंकर खुद को 'स्टार' या 'जज' की तरह गर्व के साथ प्रस्तुत करते हैं। ऐसा सिर्फ भारत में होता है। इसके अलावा यहां स्वतंत्र रिपोर्टिंग की तुलना में एजेंडा ड्रिवन एंकरिंग अधिक होती है। भारतीय एंकरों में दर्शकों की भावनाओं से खेलने की प्रवृत्ति, खासकर राष्ट्रवाद, धर्म या संस्कृति के मुद्दों परस्पष्ट नज़र आती है। ऐसा लगता है कि टीवी चैनलों की प्रस्तुतियां सोशल मीडिया ट्रेंड और वायरल तत्वों से प्रभावित रहती हैं। वहीं पश्चिमी एंकर क्रिटिकल थिंकिंग अर्थात आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देते हैं। उनकी शैली दर्शक को जानकारी देने और सोचने के लिए प्रेरित करने की होती है। दोनों के बीच की मीडिया संस्कृति का अंतर स्पष्ट झलकता है। भारतीय टीवी पत्रकारिता को अब यह आत्ममंथन करना होगा कि वह एक शो है या एक संवाद। अगर वह संवाद है, तो उसमें एंकर की सुंदरता के साथ-साथ सवालों का सौंदर्य, विचारों की स्पष्टता और संवेदना का प्रकाश भी होना चाहिए। वरना वह दिन दूर नहीं जब खबरें केवल नेत्रसुख बनकर रह जाएंगी, और सत्य, न्याय और जनसरोकार कहीं पर्दे के पीछे खो जाएंगे। इसके लिए यह भी ज़रूरी है कि हम दर्शक के रूप में अपने नजरिये को बदलें और पत्रकारिता की गुणवत्ता, विवेक और सवाल पूछने की क्षमता को प्राथमिकता दें, न कि केवल चेहरे और लुक्स को।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

हर स्तर पर सशक्त, दूरदर्शी व कर्मठ नेतृत्व चाहिए

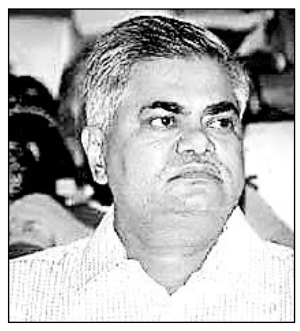

राजेश्वर सिंह

भारत में राष्ट्र व राज्यों का शासन जनसामान्य द्वारा विधिवत रूप से निर्वाचित संसद एवं विधान मंडल के प्रति उत्तरदायी सरकार द्वारा चलता है जबकि नगर, महानगर, जिला, प्रखण्ड व ग्राम में स्थानीय निकाय व पंचायती राज संस्थाओं की व्यवस्था है जो जन आकांक्षाओं के अनुरूप विकास कार्यों का क्रियान्वयन करती है तथा स्थानीय समस्याओं का स्थानीय स्तर पर समाधान करने की कोशिश करती है। इनके चुनाव में चुनाव आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त व पंजीकृत राजनैतिक दल भाग लेते हैं,जिनका आन्तरिक सांगठनिक ढाँचा भी उक्त दल के सदस्यों द्वारा विधिवत रूप से निर्वाचित होना चाहिए। दुर्भाग्यवश भारत के राजनीतिक दलों में आन्तरिक लोकतन्त्र का नितान्त अभाव है। राष्ट्रीय जनता दल, समाजवादी पार्टी, डीएमके जैसे पारिवारिक व वंशवादी दलों को छोड़ भी दिया जाए तो भी अधिकांश राष्ट्रीय दलो में आन्तरिक सांगठनिक चुनाव की प्रक्रिया स्वतन्त्र रूप से संपन्न नहीं होती। अधिकांश दलों की स्थानीय स्तर पर इकाईयां नहीं हैं और यदि हैं तो भी उनकी कार्यकारिणी विधिवत रूप से निर्वाचित नहीं है। इसकी वजह से स्थानीय स्तर पर ऐसा नेतृत्व विकसित नहीं हो पाता, जो धरातल पर सक्रिय हो ,जनसमस्याओं के समाधान में रूचि लेता हो तथा जिनके पास स्वयं का जनाधार हो। अधिकतर स्थानीय नेता व कार्यकर्ता राष्ट्रीय व राज्य स्तर के शीर्ष नेताओं की परिक्रमा में संलग्न रहते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि संगठन में पद भी वहीं से मिलेगा व स्थानीय ,प्रांतीय अथवा राष्ट्रीय चुनावों में टिकट भी।

आदर्श स्थिति तो यह है कि न केवल स्थानीय वरन प्रांतीय एवं संसदीय चुनावों में भी स्थानीय इकाई की राय को महत्व मिलना चाहिए पर चूंकि अधिकांश राजनैतिक दलों में स्थानीय इकाई या तो अस्तित्वहीन है अथवा स्वयं ही मनोनीत है अत: इस तरह की रायशुमारी की कोई स्वस्थ परम्परा आज तक स्थापित नहीं हो पाई है। इस लिए जरूरी है कि बाकायदा कानून बनाकर प्रत्येक राजनीतिक दल के लिये स्थानीय इकाई का गठन व नियमित समय अंतराल पर विधिवत चुनाव अनिवार्य किया जाए ताकि धरातल पर सक्रिय ,लोकनिष्ठ ,सिद्धांतवादी एवं कर्मठ कार्यकताओं को पार्टी के सांगठनिक ढांचे में सम्मानपूर्ण स्थान मिल सके तथा स्थानीय इकाईयां भी प्रत्याशी चयन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सके। पार्टी पदाधिकारियों के कार्यकाल पर भी लगातार दो कार्यकाल की सीमा अधिरोपित की जानी चाहिये ताकि पार्टी व्यक्ति विशेष के एकाधिकार से मुक्त रहे व नये चेहरों को भी मौका मिल सके। इसी तरह कार्यकाल का अधिकतम सीमारोपण सरपंच ,प्रधान , प्रमुख, महापौर, मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री के पदों पर भी होना चाहिये। उनका कुल कार्यकाल अधिकतम 10 वर्ष या दो कार्यकाल तक सीमित होना चाहिये।

प्रत्येक राजनीतिक दल में अध्ययन व विचारमंच तथा कार्यकर्ता प्रशिक्षण विभाग की व्यवस्था होनी चाहिये व अखिल भारतीय स्तर से लेकर तक स्थानीय स्तर तक कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर नियमित रूप से आयोजित किये जाने चाहिये ताकि कार्यकर्ता पार्टी की रीति-नीति, विचारधारा, इतिहास, परंपरा, कार्यक्रम एवं कार्यप्रणाली से भली-भांति अवगत हो सके तथा जनसामान्य से संपर्क व संवाद स्थापित कर उन्हें भी पार्टी की विचारधारा एवं कार्यक्रम से अवगत करा सके। लोक शिक्षण किसी भी राजनीतिक दल की कार्यप्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग होना चाहिये ताकि जागरूक जनमत का निर्माण किया जा सके व मतदाता सचेत ढंग से समर्थन एवं मतदान के संबध में निर्णय ले सके।

हाई कमांड कल्चर इस देश में लोकतांत्रिक मानसिकता के विकास में सबसे बड़ा अवरोधक तत्व है और सामन्ती, स्वैच्छाचारी तथा एकाधिकारवादी प्रवृत्ति का द्योतक व पोषक है।

आदर्श स्थिति तो यह है कि विधायक दल के नेता का विधिवत गुप्त मतदान द्वारा चुनाव हो और यदि यह व्यावहारिक रूप से संभव नहीं हो तो कम से कम पार्टी प्रमुख अथवा पर्यवेक्षक द्वारा गोपनीय तरीके से रायशुमारी अवश्य की जावे ताकि वही व्यक्ति नेता बन सके जिसे सर्वाधिक सांसदों एवं विधायकों का समर्थन प्राप्त हो। नेतृत्व के लिए व्यक्ति विशेष को यह समर्थन स्वत: प्राप्त नहीं हो जाता। इसके लिये उस व्यक्ति का बुद्धिमान,व्यवहार कुशल, दूरदर्शी कर्मठ एवं निर्णय क्षमता से परिपूर्ण होना आवश्यक है। इसके बिना राष्ट्र एवं राज्य तो दूर की बात है ,स्थानीय स्तर के निकायों में भी नेतृत्व हेतु समर्थन प्राप्त करना असंभव है।

यह प्रश्न उठ सकता है, कि इससे गुटबाजी की भावना को प्रश्रय मिलेगा व सरकार का सहज व प्रभावी ढंग से संचालित होना कठिन हो जाएगा किन्तु भारत के संसदीय जनतन्त्र में अनके ऐसे उदाहरण हैं जब नेता पद हेतु प्रतिद्वंद्वी रहे हुए राजनीतिज्ञ एक ही सरकार के अंग रहे व उन्होंने सहयोग, समन्वय एवं सामंजस्य का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। 1977 में राजस्थान जनता पार्टी विधानमंडल दल में नेतापद के चुनाव में भैरों सिंह शेखावत एवं मास्टर आदित्येन्द्र परस्पर प्रतिद्वंद्वी थे पर बाद में मास्टर साहब भैरोंसिंह जी की सरकार में वित्त मंत्री बने। इसी तरह का उदाहरण बिहार में डॉ. श्रीकृष्ण सिंह एवं अनुग्रह नारायण सिंह का भी है।

भारत जैसे विशाल, बहुधर्मी, बहु जातीय, बहु सांस्कृतिक एवं विविधता सम्पन्न देश में जहां संघ, राज्य, स्थानीय स्वशासन व पंचायती राज से अधिकार एवं दायित्व पूर्णतया पृथक रूप से सुपरिभाषित व स्पष्ट रूप से निर्धारित है, किसी भी व्यक्ति द्वारा ,चाहे वह कितना ही विद्वान, बुद्धिमान, दूरदर्शी, कर्मठ एवं निर्णयक्षमता से संपन्न क्यों ना हो, केन्द्र से लेकर राज्य व जिला से लेकर गांव तक की समस्याओं का समुचित अध्ययन, विश्लेषण, मूल्यांकन, योजना निर्माण एवं समाधान असंभव है।

इसके लिये जरूरी है कि राष्ट्रीय स्तर से राज्य स्तर तक तथा जिला स्तर से स्थानीय स्तर तक निर्वाचित नेतृत्व जनाधार संपन्न, सशक्त, दूरदर्शी, क्रियाशील एवं निर्णय क्षमतायुक्त राजनीतिज्ञों के हाथ में हो ताकि इस देश के सामाजिक व राजनीतिक जीवन में जड़ जमाये बैठी सामंती, स्वैच्छाचारी एवं एकाधिकारवादी प्रवृत्ति व मनोवृत्ति का समूल अंत हो तथा वास्तविक लोकतन्त्र का बीजारोपण हो सके। इसी से सत्ता का लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण भी होगा तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप स्थानीय स्तर पर ही योजना निर्माण व क्रियान्वयन भी संभव हो सकेगा।

-राजेश्वर सिंह
आईएएस (सेवानिवृत)।

नीतियों से जीवन तक: पंडित दीनदयाल अंत्योदय संबल पखवाड़ा बदलाव का सूत्रधार बना

मीनल जीनगर

राजस्थान सरकार द्वारा 24 जून से 9 जुलाई तक आयोजित "अंत्योदय संबल पखवाड़ा" ने यह सिद्ध कर दिया कि सुशासन केवल नीतियों और घोषणाओं का विषय नहीं बल्कि संवेदनशीलता, सहभागिता और धरातल तक पहुँची हुई सेवा का जीवंत उदाहरण हो सकता है। इस अभियान के अंतर्गत राज्य की प्रत्येक ग्राम पंचायत में कैंप आयोजित कर राज्य और केन्द्र सरकार की व्यक्तिगत लाभ की योजनाओं, विकास कार्यों और बजट घोषणाओं से संबंधित कार्य कर विकास की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया गया। इस अभियान के दौरान लाखों जरूरतमंद को सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पोषण, शिक्षा और आजीविका से जुड़ी योजनाओं का लाभ मिला।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जोधपुर जिले के शेरगढ़ ब्लॉक की सोइन्तरा ग्राम पंचायत में आयोजित शिविर में विशेष योग्यजन मंजू पुत्री पुंजा राम को मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन सुखद दांपत्य जीवन योजना के तहत 5 लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा जब सहायता राशि का चेक प्रदान किया गया तो मंजू की आँखों में चमक और चेहरे पर विश्वास स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। गंगा देवी 60 वर्षीय एकल विधवा, बाड़मेर के एक छोटे से गाँव में रहती है। उनके पति की मृत्यु के बाद वृद्धावस्था पेंशन आधार लिंकिंग संबंधी समस्या के कारण रुक गई थी। महीनों से वह आर्थिक संकट में थी लेकिन कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। अंत्योदय पखवाड़ा के दौरान लगे सरकारी शिविर में जब उन्होंने अपनी समस्या बताई, तो संबंधित कार्मिक ने कैंप में ही उनका आधार सत्यापन किया और पेंशन बहाल कर दी। कमलेश भील, डूंगरपुर जिले के वनवासी क्षेत्र का निवासी, कई महीनों से मनरेगा कार्ड बनवाने का प्रयास कर रहा था। अंत्योदय संबल पखवाड़ा के अंतर्गत जब सरकारी अधिकारी उसके गाँव पहुंचे तो कमलेश का बायोमीट्रिक सत्यापन कर डिजिटल फॉर्म भरा गया। उसे तत्काल मनरेगा कार्ड जारी किया गया और कुछ ही दिनों में वह जल-रक्षा परियोजना पर कार्यरत हो गया।

बांसवाड़ा - जन्म से चलने-फिरने में असमर्थ 11 वर्षीय सुमन स्कूल में अब तक घुटनों के बल जाया करती थी। उसके परिजन आर्थिक रूप से इतने सक्षम नहीं थे कि वे उसके लिए कोई विशेष सहायता उपकरण खरीद सके। अंत्योदय संबल पखवाड़ा के शिविर में उसकी चिकित्सा जांच कर दिव्यांगता प्रमाण पत्र जारी किया गया तथा ट्राइसाइकिल दी गई।

जैसलमेर के रेगिस्तानी और दुर्गम गाँवों में आज भी कई घरों में खाना लकड़ी और उपलों से बनाया जाता है जिससे महिलाओं को धुएँ से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होती हैं। अंत्योदय पखवाड़ा के तहत 1500 से अधिक घरों को पीएम उज्ज्वला योजना के तहत नि:शुल्क एलपीजी कनेक्शन दिए गए। सूरजमल, नागौर का लघु किसान, भूमि रेकार्ड में त्रुटि के चलते पीएम किसान योजना का लाभ नहीं ले पा रहा था कई बार प्रयास करने के बाद भी कोई समाधान नहीं हुआ। शिविर में राजस्व अधिकारियों ने उसकी समस्या सुनी और तत्काल रेकार्ड अपडेट किया। उसी दिन इस योजना की लंबित राशि उसके बैंक खाते में आ गई।

अजमेर जिले की लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह वर्षों से छोटे स्तर पर कार्य कर रही थी लेकिन उन्हें वित्तीय सहायता नहीं मिल रही थी। शिविर में इसे 50 हजार रूपये के रिवॉल्विंग फंड का चैक सौंपा गया। इस राशि से उन्होंने पापड़ निर्माण इकाई शुरू की और अन्य महिलाओं को भी काम देना शुरू किया। कोटा जिले में आयुष्मान भारत योजना के तहत 22,000 से अधिक लोगों की जांच की गई। इसमें 300 से ज्यादा लोगों में हृदय, मधुमेह या किडनी जैसी गंभीर बीमारियाँ पहली बार पता चली। इन मरीजों को गोल्डन कार्ड जारी किए गए, सरकारी अस्पतालों में नि:शुल्क इलाज की सुविधा भी प्रदान की गई।

रुकमणी देवी, बालोतरा की विधवा महिला, सिलाई जानती थी लेकिन संसाधन नहीं थे। उन्हें प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत 25 हजार रूपये का लोन मिला जिससे उन्होंने तीन नई मशीनें खरीदीं और दो महिलाओं को

रोजगार दिया।

फरहान, ब्यावर का एक 17 वर्षीय युवक, जिसने दसवीं के बाद गरीबी के कारण पढ़ाई छोड़ दी थी। उसे अंत्योदय शिविर में कौशल विकास योजना के तहत मोबाइल रिपेयरिंग व डिजिटल लिटरेसी का कोर्स मिला। अब वह अपने गाँव में डिजिटल सेवा केंद्र चलाता है और लोगों को सरकारी योजनाओं में मदद करता है। भीलवाड़ा का रामेश्वरलाल, 65 वर्षीय किसान, दस्तावेजों में त्रुटि के कारण पेंशन और किसान योजना दोनों से वंचित थे। पखवाड़ा में दोनों योजनाओं से जुड़कर उन्होंने 2,000 रूपये की किसान सहायता और 750 रूपये प्राप्त की।

चित्तौड़गढ़ की माया देवी, जिन्हें सिर दर्द और थकावट रहती थी, शिविर में जाँच के दौरान हाई ब्लड प्रेशर पाया गया। उन्हें आयुष्मान कार्ड जारी कर तत्काल सरकारी अस्पताल में रेफर किया गया। उनका इलाज पूरी तरह नि:शुल्क रहा। डीग निवासी 3 वर्षीय आरव कुपोषित था। पोषण मेले में उसे चिन्हित कर टेक होम राशन और पोषण शिक्षा दी गई। एक महीने के भीतर उसका वजन सामान्य स्तर पर आ गया।

आदिवासी किसान बंशीलाल पारंपरिक तरीकों से खेती करता था। शिविर में कृषि विभाग ने मिट्टी जांच करवाई और स्प्रेयर मशीन व उन्नत बीज प्रदान किए। रामपुरा गाँव की संगीता कंवर जैसी महिलाएं पहले पेयजल लाने 2 किमी दूर जाती थीं। जल जीवन मिशन के तहत 56 परिवारों को नल कनेक्शन मिले और अब हर घर में पानी है।

जोधपुर - गफ्फार अली, निर्माण श्रमिक है जो वर्षों से भवन निर्माण कार्यों पर मजदूरी करता आ रहा है लेकिन उसके पास न कोई श्रमिक पहचान पत्र था, न किसी सरकारी योजना का लाभ मिला। अंत्योदय संबल पखवाड़ा के दौरान जोधपुर में लगे श्रमिक पंजीकरण शिविर में उसका रजिस्ट्रेशन किया गया और उसी दिन श्रमिक कल्याण कार्ड जारी हुआ। लक्ष्मीबाई, नागौर जिले की एक मेहनती महिला किसान, लगातार सूखे और असिंचित जमीन के कारण नुकसान झेल रही थीं। उनकी फसल बार-बार खराब हो रही थी। अंत्योदय पखवाड़ा शिविर में उन्हें सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई पंप योजना की जानकारी दी गई और आवेदन करवाया गया। कुछ ही दिनों में उन्हें 80 प्रतिशत सब्सिडी पर सोलर पंप प्राप्त हुआ। अब उसके खेतों में नियमित सिंचाई हो रही है और फसल की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। पाली जिले की गीता देवी पति की मृत्यु के बाद बिना जन आधार कार्ड और राशन कार्ड के किसी भी योजना से वंचित थीं। अंत्योदय शिविर में आधार सत्यापन के बाद उनका नाम अन्नपूर्णा योजना में जोड़ा गया और जन आधार कार्ड भी बना। अब वे हर महीने नि:शुल्क राशन प्राप्त करती है और सार्वजनिक वितरण प्रणाली से जुड़ गई है। गीता देवी कहती है, पहले लोगों से उधार मांगती थी, अब खुद राशन लेकर आती हूँ-आत्मसम्मान लौटा है। काजल मीणा, सलूम्बर की एक जनजातीय छात्रा, पढ़ाई में होशियार लेकिन स्कूल दूर होने के कारण अक्सर अनुपस्थित रहती थी। अंत्योदय संबल पखवाड़ा के दौरान उसे जनजाति छात्रवृत्ति योजना में नामांकित किया गया और साइकल वितरण योजना के अंतर्गत एक नई साइकल सौंपी गई अब वह रोज़ स्कूल जाती है और कहती है, अब मेरे सपने रुकेंगे नहीं, चलेंगे भी और दौड़ेंगे भी। सिरोही का राजू चौधरी पोलियो के कारण चलने में असमर्थ था और किसी पर निर्भर रहना उसकी मजबूरी थी। पखवाड़ा के दौरान लगे दिव्यांगजन सेवा शिविर में उसका चयन किया गया और उसे एक मोटराइज्ड ट्राइसाइकिल प्रदान की गई। श्रीगंगानगर जिले के किसान हरभजन सिंह की खरीफ फसल बेमौसम बारिश के कारण पूरी तरह नष्ट हो गई थी। उनका बीमा दावा लटका हुआ था। पखवाड़ा में कृषि विभाग की टीम ने मौके पर दस्तावेज़ों की जाँच की और उनका दावा स्वीकृत कर 18,000 रूपए की बीमा राशि खाते में जमा कराई गई। एक पखवाड़ा, हजारों ज़िंदगियाँ, एक संदेश- राजस्थान सरकार द्वारा संचालित अंत्योदय संबल पखवाड़ा की यह कहानियाँ महज़ सरकारी आँकड़े नहीं हैं बल्कि हर नागरिक की गरिमा, आत्मविश्वास और पुनर्स्थापित उम्मीदों की मिसाल हैं। इन सफलताओं ने यह दर्शाया कि यदि शासन में संवेदना, संकल्प और समर्पण हो, तो अंतिम व्यक्ति भी विकास की धारा में सम्मिलित हो सकता है।

मीनल जीनगर, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के सचिवालय स्थित मुख्यालय में सहायक सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी पद पर कार्यरत हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 16 जुलाई, 2025

सावन मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2083, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र प्रात: 5:48 तक, शोभन योग दिन 11:57 तक, गर करण प्रात: 9:51 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज कुमार योग 5:48 तक है। रवियोग प्रात: 5:48 से रात्रि 4:50 तक है। राजयोग रात्रि 9:02 से रात्रि 4:50 तक है। भद्रा रात्रि 9:02 से आरम्भ होगी। आज सावन संक्रांति, सूर्य कर्क में प्रवेश सायं 5:32 पर करेगा। पुण्य काल आज सूर्यास्त तक है। आज पंचक और मनसा पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:10 तक, शुभ 10:51 से 12:33 तक, चर 3:55 से 5:37 तक, लाभ 5:37 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:18

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ